रेडियो धाारावाहिकः जीवन तेरे रूप अनेक

एपिसोड–19

''जीवन के प्रतीक– देव वन''

आलेखः देवेन्द्र मेवाड़ी

उद्घोषकः जीवन तेरे रूप अनेक। प्रस्तुत है राष्ट्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संचार परिषद् और आकाशवाणी के सहयोग से तैयार किया गया यह धाारावाहिक कार्यक्रम।.

आज की कड़ी का शीर्षक है– ''जीवन के प्रतीक– देव वन''। आलेख देवेन्द्र मेवाड़ी ने तैयार किया है और इस कड़ी के प्रोड्यूसर हैं श्री ...।

तो प्रस्तुत है आज की कड़ी– ''जीवन के प्रतीक– देव वन''

..... संगीत.....

(घर में मेधा, प्रयास, पापा, मम्मी)

पापा(प्रशांत): मेधा! मेधा!

मेधा : हां पापा।

पापाः क्या कर रहे हो? प्रयास कहां है?

प्रयासः मैं भी यही हूं पापा।

पापाः अरे भाई नाश्ता तैयार हो गया है। चलो, पहले नाश्ता कर लो।

मम्मी (माधवी): चलो बच्चो, नाश्ते के लिए तैयार हो जाओ।

प्रयासः पापा हम शकुंतला सीरियल देखेंगे।

मेधा : (मचल कर) हां पापा।

मम्मीः क्या शकुंतला? आज ही आता है ना? वो तो मैंने भी देखना है।

मेधा /प्रयासः हे हे ..। पापा आप इधर बैठिए। नाश्ता यहीं करेंगे। मम्मी जल्दी आइए। 'शकुंतला' शुरू हो रहा है।

(टी. वी के चैनल की आवाषें और फिर सितार की झंकार व बांसुरी की धुन के साथ उद्घोषणा....

पिछली कड़ियों में आपने देखा– महख्रष विश्वामित्र स्वर्ग की अप्सरा मेनका पर आसक्त हो गए। कालांतर में मेनका ने एक सुंदर पुत्री को जन्म दिया। मेनका उसे चुपचाप महर्षि कण्व के आश्रम में रख आई। महख्रष कण्व ने उसका नाम शकुंतला रखा। घने पेड़–पौधों से घिरे हरे–भरे आश्रम में वन्य प्राणियों के साथ–साथ शकुंतला बड़ी हुई। वह अपनी सहेलियों प्रियंबदा और अनसूया के साथ मश्गों और अन्य प्राणियों को भोजन कराती। पक्षी उसे घेरे रहते। मोर नृत्य दिखाते।..एक दिन आखेट करने राजा दुष्यंत वहां आए..

.....संगीत.....

(चिड़ियों का कलरव, यजुर्वेद की प्रार्थना के गूंजते स्वर ''द्योः शांतिरंतरिक्ष शांतिः पृथ्वीशांतिरापः शांतिरोशधयः शांतिः। वनस्पतयः शांतिविश्व देवाः शांतिर्ब्रह्म शांतिः सर्वशांतिः।
शांतिदेवशांतिः सा मा शांतिरेधि।। ।36–37।।–यजुर्वेद
(तीन लड़कियों के खिलखिलाने की आवाजें)

प्रियंबदाः शकुंतला वह मृग छौना मुझे दे दो।

अनुसूयाः नहीं शकुंतला पहले मुझे देना। प्रियंबदा तो शावकों से खेल रही थी।

शकुंतलाः देखो प्रियंबदा और अनुसूया, यह मृग छौना तो मेरे पास ही रहेगा। जानती हो, मैने इसकी मां से इसे मांगा है। वह चरने गई है। लौटेगी तो मांगेगी। मैं तो यह मृगछौना उसे ही दूंगी।

प्रियंबदाः (रूठ कर): नहीं शकुंतला, लाओ मुझे दो...
(कण्व फकारते हैं)

कण्वः शकुंतला! ..शकुंतला! (हंस कर) अरे तुम इस मृग छौने से खेल रही हो। उससे बातें कर रही हो।

शकुंतलाः इसे हरी पत्तियां खिला रही हूं पिताश्री।

कण्वः अच्छा तो यह छौना तुम्हारी बातें भी समझ रहा है?

शकुंतलाः हां पिताश्री। हमारे आश्रम के प्राणी और पक्षी मेरी बातें समझते हैं। मैं भी उनकी बातें समझती हूं।...

कण्वः लगता है यह मयूर भी तुम्हारी बात समझ कर नाचने लगा है..इन प्राणियों से तुम इतना प्यार करती हो शकुंतला। जब पति के घर चली जावोगी तो ये क्या करेंगे?

शकुंतलाः (रूठ कर) आं..आं.. मैं इन्हें छोड़ कर कहीं नहीं जावूंगी पिताश्री। नहीं तो ये अपने प्राण दे देंगे।

कण्वः अच्छा चलो। इनको भोजन करा चुकी। अब तुम फलाहार कर लो। प्रियंबदा, अनुसूया तुम भी आओ...

.....संगीत.....

(घोड़ों के टापों की आवाजें, चिड़ियों के चीखने की आवाजें, जंगल में मृग का पीछा करते हुए राजा दुष्यंत)

दुष्यंतः रूको इस मृग का आखेट मैं करूंगा..

प्रियंबदाः (चीख कर) मृग पर वाण मत चलाइए। यह महर्षि कण्व का आश्रम है।

शकुंतलाः ये सभी आश्रम के प्राणी हैं। आप इनका वध नहीं कर सकते।

दुष्यंतः वध नहीं कर सकते? क्यों?

शकुंतलाः क्योंकि ये हमें अपने प्राणों से भी प्रिय हैं।

दुष्यंतः हें, आपको प्राणों से भी प्रिय हैं? और आप? क्या मैं इस कोमल हद्रय स्वामिनी का परिचय प्राप्त कर सकता हूं?

प्रियंबदाः यह शकुंतला है। महर्षि कण्व की पुत्री।

दुष्यंतः कितनी सुंदर। कितनी सौम्य। जीवों के प्रति कितनी ममता है इनमें।

अनुसूयाः आप अतिथि हैं। आश्रम में हमारा आतिथ्य स्वीकार कीजिए..

.....संगीत.....

(डोरबेल बनजे की आवाज। खट्–खट्)

पापाः (पत्नी से)देखो जरा, कौन है?

मम्मीः (दरवाजा खोलने की आवाज) अरे, गौतम भाई साहब हैं। आइए, आइए भाई साहब...

पापाः अरे वाह, गौतम कब लौटे?

गौतमः बस कल ही लौटा हूं।

मेधा/प्रयासः नमस्ते अंकल.नमस्ते अंकल..

पापाः कैसा रहा तुम्हारा टूर? महीनों हो गए मिले हुए।

गौतमः टूर तो अच्छा रहा लेकिन काफी थक गया हूं। एक बात बताऊं? जब तक घर से बाहर न निकलें– पता ही नहीं चल सकता कि हमारे देश में ही कितनी सुंदर चीजें हैं देखने के लिए।

मम्मीः क्या–क्या देख आए भाई साहब? हमें भी तो बताइए।

पापाः अरे बताएंगे। इसीलिए तो आए हैं। पहले पानी–वानी तो पिलाओ।

गौतमः सच कहता हूं बड़ी मेहनत का काम है ये पी. एच. डी. करना।

पापाः लेकिन यार, तुम्हारा विषय बहुत मजेदार है– ''जीव संरक्षण में देव वनों का महत्व।'' तो मियां, वनों की खाक छानी होगी?

गौतमः ठीक कहते हो प्रशांत– वनों में खूब भटका। कैसे–कैसे वन देखे और कितने निराले पशु–पक्षी।

मेधाः अंकिल आपने बहुत सारे पशु–पक्षी देखे?

गौतमः हां बेटे। मैं देव वनों की यात्रा पर गया था ना? वहां मैंने कई तरह के पेड़–पौधो और पशु–पक्षी देखे।

मम्मीः हमें तो भाई साहब अब इस टी. वी. पर ही दिखाई देते हैं। ये बच्चे अभी 'शकुंतला' सीरियल देख रहे थे। उसमें पशु–पक्षियों को देख कर कितने खुश हो रहे थे।

गौतमः मेधा, गौतम बेटे पहले तक हमारे देश में ऋषि–मुनियों के आश्रम होते थे। उनमें हरे–भरे पेड़ होते थे, पशु–पक्षी होते थे। इस तरह उनके संरक्षण की परंपरा बनी।

प्रयासः अब क्यों नहीं होते अंकल?

पापाः (हंसते हुए) इसीलिए बेटे कि अब तुम आश्रमों और गुरूकुलों में नहीं पढ़ते। कांवेंट स्कूल में पढ़ते हो। क्यों गौतम ठीक कह रहा हूं?

गौतमः बिल्कुल ठीक कह रहे हैं। जंगल कट गए। पशु–पक्षियों के घर उजड़ गए।

मेधाः क्या अब उनके रहने के लिए जंगल हैं ही नहीं अंकल?

गौतमः हैं तो सही, लेकिन बहुत कम। फिर भी कई देव वनों, पवित्र तालाबों और सुरक्षित घनघोर जंगलों में अब भी जीव–जंतु जी रहे हैं।

मम्मीः भला हो हमारी देव वनों की परंपरा का।

गौतमः प्रशांत, तुम्हें पता है आज देश भर में केवल 17000 देववन ही रह गए हैं।

प्रशांतः हां, बाकी तो आदमी ने उजाड़ दिए हैं ना?

गौतमः नहीं केवल उजाड़े ही नहीं हैं– अपनी जान देकर पेड़–पौधो बचाए भी हैं।

प्रयासः जान देकर? अंकल क्या पेड़ों को बचाने के लिए लोगों ने जान भी दी है?

गौतमः दी है बेटे। राजस्थान के बिश्नोइयों के बारे में सुना है तुमने?

मेधाः नहीं अंकल, नहीं सुना है। हमारे कोर्स में ही नहीं है। आप बताइए ना?

गौतमः आज बिश्नोई समाज के लोगों के ही कारण उनके गांवों में खेजड़ी के हरे–भरे पेड़ हैं, बड़ी संख्या में काले हिरन, चिंकारा, कई दूसरे जीव–जंतु, मोर और अन्य पशु–पक्षी निर्भय होकर घूमते हैं।

प्रयासः शकुंतला वाले आश्रम की तरह?

गौतमः बिल्कुल। ये प्राणी उनके घरों में आते हैं। उनके हाथों से चारा और अनाज खाते हैं।

मेधाः सच अंकल?

गौतमः बिल्कुल सच मेधा। अच्छा, सुनो मैं जोधफर गया था। वहां मैं बिश्नोइयों के शेखाला और दूसरे गांवों में भी गया। वहां यह सब देखा।

पापाः खेजड़ली गांव में तो सुना है पेड़ों के लिए जान देने वाले बिश्नोइयों की याद में एक मारक मंदिर भी बना है?

गौतमः आपने ठीक सुना है प्रशांत भाई। मैंने उसे भी देखा। उसे देखते–देखते मैं तो जैसे अतीत में खो गया था। वह नरसंहार जैसे मैं अपनी आंखों से देख रहा था....

(फ्लैश बैक संगीत)

(लोगों के आपस में बोलने की आवाजें, घोड़ों की हिनहिनाहट)

स्त्री स्वर (अमश्ता देवी): खम्मा घणी सा।

फरूष सैनिक : (गुस्से से) घणी खम्मा। यां के कर रही है?

अमश्ता देवीः खेजड़ी बचाने आए सा।

सैनिक–1: (और गुस्से से) तू नहीं बचेगी और न तेरी खेजड़ी बचेगी।

सैनिक–2 : अरी हट जा। राजा सा का हुकुम है। चूने की भट्टी के लिए लकड़ी चाहिए। जोधफर का किला बन रहा है।

अमृताः मैं प्राण दे दूंगी। खेजड़ी नहीं कटने दूंगी। तुम म्हारे भाई हो। खेजड़ी काट दोगे तो गांव में सूखा पड़ जाएगा। मत काटो मेरे भाई।

(आवाषे– हां–हां मत काटो)

सैनिक–1: क्या? राजा सा का हुकुम ना माने हम? हट जा।

अमृताः अरे, हमारे स्वामी जम्बा जी महाराज ने कहो है– हरे पेड़ा को मत काटौ। ये पवित्र पेड़ हैं।

सैनिक–2 : बहस मत कर। हट जा।

अमश्ताः तो खेजड़ी काटने से पहले तुम्हें मुझे काटना पड़ेगा।

सैनिक–1: तो ठीक। ले, मैं तुझे काट देता हूं।

(काटने की आवाष, चीख, चिल्लाहट)

अमश्ता (मरते हुए): ''सर सांठे रूके रहे तो भी सस्तो जान।''

एक स्वरः चलो, खेजड़ी के पेड़ों से लिपट जाओ।

(कोलाहल, चीत्कार, चीखें)

सैनिक–3: ये तो आते जा रहे हैं।

सैनिक–1: तुम इन्हें काटते जाओ..चलो.....

(कराहें..जय जम्बा जी...जय जम्बा जी...)

————————————————परिवर्तन संगीत————————————————

(घोड़ों की टापें, घोड़ों की हिनहिनाहट)

सैनिकः (घबरा कर) महाराजा सा, महाराजा सा..महाराजा सा आ रहे हैं...

महाराजाः (भारी आवाज में) रोको! ये क्या किया तुमने।

कई सैनिकः खम्मा घणी सा..खम्मा घणी सा...

एक सैनिकः राजा सा ये खेजड़ी नहीं कटने दे रहे हैं।

महाराजाः तो तुमने इन्हें काट दिया? कितने बिश्नोइयों को मार डाला है?

सैनिक : तीन सौ तिरेसठ (363) कट चुके हैं राजा सा।

महाराजाः बंद करो यह सब। आप लोग मुझे क्षमा कर दो और सुनो, आज से बिश्नोइयों के गांव में खेजड़ी का कोई पेड़ नहीं कटेगा। यह मेरा हुकुम है।

कई सैनिकः हुकुम राजा सा।

————————————————परिवर्तन संगीत————————————————

मेधाः खेजड़ी के लिए इतने लोगों ने अपनी जान दे दी अंकिल?

गौतमः हां बेटे। उनके बलिदान के बाद जलनाडी गांव को खेजड़ली कहा जाने लगा।

प्रशांतः लेकिन, वे दिन और थे गौतम भाई। वे लोग भी और ये जो पेड़ों के लिए जान दे गए। अब तो रहीम की बात याद आती है–

रहिमन अब वे बिरछ कंह जिनकी छांव गंभीर
बागन–बिच बिच देखियत, सेंहुड़ कंज करीर।

मम्मीः ना–ना मैं नहीं मानती। लोग तो आज भी हैं जो पेड़ों को बचाने के लिए अपनी जान पर खेलने को तैयार रहते हैं। गौरा देवी ने क्या कम हिम्मत दिखाई?

मेधाः कौन गौरा देवी मम्मी? आपने हमें तो नहीं बताया?

पापाः कोई बात नहीं बेटे, अब सुन लो। मम्मी 'चिपको' वाली गौरा देवी की बात कर रही हैं।

प्रयासः चिपको मूवमेंट पापा? उन लोगों ने पेड़ बचाए थे ना?

मम्मीः हां बेटे। गढ़वाल के रैणी गांव की गौरा देवी और गांव की महिलाओं ने मिल कर ठेकेदार के आदमियों को पेड़ नहीं काटने दिए। वे पेड़ों से लिपट गई थीं।

प्रयासः इसीलिए इसे 'चिपको' कहा गया होगा।

पापाः बेटे, यही आंदोलन आगे चल कर 'चिपको आंदोलन' बना और रैणी गांव का नाम दुनिया भर में फैल गया। ..अच्छा चलो, आज काफी बातें हो गईं। मैं जरा गौतम से गपशप कर लूं।

मेधाः गौतम अंकिल से हमने भी तो जंगलों और जानवरों की बातें सुननी हैं।..

पापाः गौतम, एक काम करते हैं। परसों इतवार है। चिड़ियाघर देखने आ सकते हो? ये बच्चे भी जिद कर रहे हैं।

गौतमः बिल्कुल आ सकता हूं। मेरे बच्चे भी आएंगे। पिकनिक हो जाएगी। क्यों मेधा, प्रयास?

पापाः ठीक है तो मेधा, सुनो प्रयास, परसों चिड़ियाघर की सैर पर चलेंगे। वहीं गौतम अंकिल से बाकी बातें सुनोगे।..अभी तुम लोग खेलो...

————————————————परिवर्तन संगीत————————————————

(चिड़ियों का कलरव, इन दिनों चिड़ियाघर में प्रवासी पक्षियों का कलरव रिकार्ड कर सकते हैं)।

मेधाः पापा वो देखो, कितनी सारी चिड़ियां?

प्रयासः कितनी बड़ी हैं ये।

गौतमः ये 'पेलिकन' और पेन्टेड स्टार्क' हैं प्रयास।

मेधाः अंकिल देखो–देखो वे पानी में कौन सी चिड़ियां तैर रही हैं?

गौतमः जलकव्वे और मुर्गाबियां हैं। आओ, हम लोग इधर बैठ कर बातें करते हैं। प्रशांत, मेधा, गार्गी आइए भाभी जी, शालिनी चलो। हां यहां, बस ठीक है...

गार्गी(गौतम की बेटी):पापा ये बड़ी–बड़ी चोंच और ये बड़े पैरों वाली चिड़ियां सदा यहीं रहती हैं?

गौतमः नहीं बेटे, ये सर्दियों में दूर देशों से आती हैं। ये तो बहुत कम हैं। मैंने तो..मैंने तो..सुन रहे हो प्रयास, मेधा?

मेधाः हां अंकिल हम सुन रहे हैं। क्या आपने ये चिड़ियां इससे भी ज्यादा देखीं?

गौतमः अरे हां। मैंने तो इन पैलिकनों और पेन्टेट स्टार्क चिड़ियों का पूरा गांव देखा है।

मेधाः गांव?

प्रयासः चिड़ियों का गांव?

गौतमः हां बेटे इन चिड़ियों का गांव। वहां पेड़ों पर इनका गांव है और षमीन पर आदमियों का गांव।

पशांतः अब पूरी बात बताओ गौतम। हम भी तो सुन रहे हैं।

माधवीः देखो जी, भाई साहब, क्या–क्या देख आए हैं। एक तुम हो–कहीं नहीं ले जाते।

शालिनीः ये कौन–सा मुझे ले जाते हैं दीदी। अकेले–अकेले देख आते हैं।

प्रशांतः शुकर करो, तुम्हें अपना गांव तो दिखा लाता हूं।

गौतमः मुझे तो मेरी पीएच.डी. सैर करा रही है। क्या करूं।

प्रशांतः ठीक है, ठीक है। अब आगे बताओ तो सही।

गौतमः बंगलौर से करीब 70 किलोमीटर दूर एक गांव है– कोकरेबेल्लूर।

(संगीत परिवर्तन, पेलिकनों और स्टार्क पक्षियों का तेज कोलाहल, धीरे–धीरे कम होता है)

गौतमः नमस्कार।

ग्रामीणः नमस्कार। कोकरे देखने आए?

गौतमः कोकरे?

ग्रामीणः वो कोकरे हैं..पेड़ पर..लंबा चोंच..

गौतमः (हंस कर) अच्छा–अच्छा! कोकरे! पेन्टेड स्टार्क को कहते हैं आप। अच्छा, इसीलिए आपका गांव 'कोकरेबेल्लूर' है?

ग्रामीणः हां–हां। कोकरे को तंग नहीं करना।

गौतमः नहीं–नहीं। मैं चिड़ियों से प्यार करता हूं। अच्छा, बाबा इन पेड़ों पर रहती हैं ये चिड़ियां।

ग्रामीणः हां..हां। हमारे इमली के पेड़ों पर। हम इमली नहीं तोड़ते। पेड़ नहीं काटते।

गौतमः बहुत अच्छा। सभी गांव वाले चिड़ियों को अच्छा मानते हैं?

ग्रामीणः अच्छा मानते हैं। उनकी देखभाल के लिए हेजार्ले बलागा है।

गौतमः हेजार्ले बलागा?

ग्रामीणः इन चिड़ियों की देखभाल, सेवा के लिए कमेटी है। पक्षी पालन केन्द्र भी है। आओ, देखो. (चलने की आवाज, चिड़ियों की कर.कर.कें.कें)

गौतमः अरे, यहां तो इनका इलाज भी होता है।

ग्रामीणः कमजोर और घायल चिड़िया की सेवा करते हैं।

गौतमः सेवा करने वाले ये सब गांव के बच्चे हैं।

लड़काः सर,हम सब गांव के ही वालंटियर हैं। इन चिड़ियों को देखते हैं। इनकी रक्षा करते हैं। यहां हमारे गांव के सभी 300 परिवार इन चिड़ियों को बचा रहे हैं।

गौतमः कब से बचा रहे हैं?

लड़काः करीब 80 वर्षों से।

गौतमः शाबास। तुम लोग बहुत नेक काम कर रहे हो।

लड़काः थैंक्यू सर। ये हमारा 'पीफल्स बर्ड सैंक्चुरी' है। यहां हर साल नवंबर और जनवरी में सैकड़ों पक्षी आते हैं। जून में बच्चों के साथ लौट जाते हैं।

गौतमः मैं जीवों के संरक्षण पर रिसर्च कर रहा हूं। आप लोगों का निःस्वार्थ काम देख कर बहुत खुशी हुई। इट्स एन इक्जैम्पिल फॉर अदर्स।...

————————————————परिवर्तन संगीत————————————————————

प्रशांतः गौतम लगता है, जीवों की रक्षा करने वाले लोग अभी इस दुनिया में हैं।

गौतमः अरे बिल्कुल हैं प्रशांत। सच पूछो तो लोगों के अपने प्रयासों से पेड़–पौधों और जीव–जंतुओं की जातियां बची हैं और बच पाएंगीं।

माधवीः आप ठीक कह रहे हैं भाई साहब। नियम–कानूनों से ज्यादा हमारी अपनी कोशिशों से बचेंगे पेड़–पौधे और प्राणी..

गौतमः कर्नाटक में मैं काफी घूमा। जानते हैं वहां 50900 हैक्टेयर से भी ज्यादा भूमि में 1424 देववन हैं। इन्हें वे देवराबन, देवराकाडू या नागबन कहते हैं।

मेधाः अंकिल, आप किसी देववन में भी गए?

गौतमः हां बेटे, मैंने उत्तर क डा में सिदफर के पास केटलकान और होनावर तालुक में करिकान देवराबन देखे। उनमें पेड़–पौधों की दुर्लभ जातियां बची हुई हैं क्योंकि उन देवताओं के वनों में कोई पेड़–पौधो नहीं काट सकता। कई तरह के जानवर भी वहां हैं।

प्रयासः पापा, जानवर तो यहां जू में भी बहुत हैं। चलिए, दिखाइए ना।

प्रशांतः (हंस कर) अरे..रे..हां भाई। हम तो भूल ही गए थे। चलो बच्चो को चिड़ियाघर के जानवर तो दिखा दें। चलते–चलते बात करेंगे।

शालिनीः हां, चलिए भाई साहब। इनकी तो बातें ही खतम नहीं होती।

गौतमः ये बातें हैं ही ऐसी शालिनी। अब विडंबना देखो– जंगलों की खुली हवा में जीने वाले ये बेचारे जानवर यहां पिंजरों के भीतर जी रहे हैं। देववनों में वे आषाद तो हैं...

प्रशांतः ये देववन और भी कहीं हैं गौतम?

गौतमः हां–हां, देश भर में फैले हुए हैं। इनके नाम भी अलग–अलग हैं– महाराष्ट्र में देवराई या देवराहटी, राजस्थान में ओरांस, मध्य प्रदेश, झारखंड और बिहार में सरना कहते हैं। केरल में कावू और तमिलनाडु में कोविलकाडु कहते हैं। मणिफर में लाइ उमंग कहते हैं।

माधवीः भाई साहब, आपने तो सारे नाम याद कर लिए हैं।

गौतमः हां भाभी जी, नहीं तो मेरी पीएच.डी. कैसे पूरी होगी।

प्रशांतः अच्छा गौतम, ये बताओ मणिपुर–मेद्यालय में भी किसी देववन में गए? वहां कैसा लगता है?

गौतमः गया क्यों नहीं, मेघालय की जैंतिया पहाड़ियों में तीस एकड़ का घना देववन है– 'रव्ला ब्लेइ'। उसमें वे लोग यू रिंक्यू यू बासा देवता का निवास मानते हैं। घनघोर जंगल है।

प्रशांतः तुम्हें डर नहीं लगा उसमें?

गौतमः प्रशांत उस देववन में जूते पहन कर नहीं जा सकते। जंगल को कोई भी किसी तरह का नुकसान नहीं पहुंचा सकता। सूखी और सड़ी–गली पत्तियों की भारी परत पैरों के नीचे और सांप बहुत हैं.....

प्रयासः अरे, बाप रे, सांप.....

गौतमः हां प्रयास, सांप, कीड़े–मकोड़े सभी। और हां, दुर्लभ जातियों के पेड़–पौधो हैं, नाना प्रकार के रंग–बिरंगे पक्षी हैं.....वे सब देवताओं के उस वन में जी रहे हैं। वहां वे बचे हुए हैं।

प्रशांतः बचे हुए तो ये जानवर भी हैं गौतम। भले ही पिंजरों में जी रहे हैं। नहीं तो आदमी ने तो शिकार करते–करते कितने ही जीव–जंतुओं को नष्ट कर दिया है। अब देखो, भारत का हमारा चीता केवल चित्रें में रह गया है.....अब चलना चाहिए। चलो बच्चो, अब चलते हैं.....

मेधाः पापा.....पापा वो देखो कितनी बड़ी दाढ़ी वाला बंदर।

प्रयासः अरे बंदर पर शेर की पूंछ।

गौतमः (हंसते हुए) बेटे, वो मैकाक बंदर है। इसका घर कहां है जानते हो?

मेधाः हां अंकिल,षू में।

गौतमः नहीं मेधा, इनका घर है– केरल की साइलेंट वैली में। तुमने अभी जो तलवार जैसी बड़ी–सी मोटी चौंच वाला धनेश देखा, उसका घर भी वहीं है।

गौतमः प्रयास, साइलेंट वैली में बांध बनाने का निश्चय किया गया था जिससे हजारों जीव–जंतुओं और पेड़–पौधों की दुर्लभ जातियों का जीवन नष्ट हो जाता। वहां कई जीव–जंतु तो ऐसे हैं जो केवल वहीं और श्रीलंका में पाए जाते हैं।

प्रयासः तो फिर क्या हुआ अंकिल?

गौतमः बांधा का इतना विरोधा हुआ..इतना विरोधा हुआ कि वह..बना ही नहीं। और, लाखों जीव–जंतु बच गए।

प्रशांतः गौतम, दुर्लभ जीवों से याद आ गया। सुनते हैं, उधर चिल्का झील के ओलिव रिड्ले कछुए भी अब बच जाएंगे।

गौतमः हां, वहां गहिरामाथा तट को इन कछुओं का अभयारण्य घोषित कर दिया गया है। दुनिया में ये कछुए केवल वहीं पाए जाते हैं।

प्रशांतः कहते हैं चिल्का झील जीव–जंतुओं का स्वर्ग है?

गौतमः बिल्कुल है। वहां विभिन्न प्राणियों की 800 जातियां पाई जाती हैं जिनमें कई दुर्लभ जातियां हैं। समुद्री मछलियों की 1400 जातियां पाई जाती हैं जिनमें से 152 जातियां केवल वहीं पाई जाती हैं। पेड़–पौधों की 710 जातियां..

प्रशांतः बस..बस तुमने तो आंकड़े भी याद कर लिए हैं।

गौतमः याद नहीं किए हैं, याद हो गए हैं प्रशांत। विषय ही इतना रोचक है।

प्रशांतः ये बात तो है।..तो अब चलें? क्यों बच्चो चलना चाहिए?

मेधाः हां पापा...

प्रयासः आज तो सपने में भी जानवर और चिड़ियां दिखाई देंगी।

गौतमः बस बच्चो, यह संकल्प कर लो कि तुम लोग भी पेड़–पौधों को, जीव–जंतुओं को चाओगे ताकि उन्हें केवल सपने में या किताबों में नहीं– उनके अपने घरों में, हरे–भरे जंगलों, नदी–तालाबों और समुद्रों में देख सको।

———————————————— संगीत————————————————

उद्घोषकः अभी आप सुन रहे थे– धारावाहिक 'जीवन तेरे रूप अनेक' की इस बार की कड़ी 'जीवन के प्रतीक– देववन।'' यह आलेख तैयार किया श्री देवेन्द्र मेवाड़ी ने, संगीत में संजोया आकाशवाणी के संगीत विभाग ने, और इस कड़ी का प्रॉडकृान किया श्री .....ने।

इस धाारावाहिक की अगली कड़ी में आप सुनेगें– क्या होता है जब जीव–जंतुओं के घर उजड़ते हैं। वे प्रदूषण, तेजाबी वर्षा और जंगलों की आग कैसे झेलते हैं। और, विकास के कदम उन्हें कैसे रौंद देते हैं।

देवेंद्र मेवाड़ी

सूत्रधारः पिछली कड़ी में आपने सुना कि जीवन की विविधता को बचाए रखने के लिए क्या–क्या प्रयास किए जा रहे हैं। बीजों के विशाल बैंक बनाए गए हैं। जीन बैंकों की स्थापना की गई है। पौधों, जीव–जंतुओं और मछलियों की जातियों के संरक्षण के लिए राष्ट्रीय ब्यूरो बनाए गए हैं। हिमीकरण करके बीजों, शुक्राणुओं और सूक्ष्म अंडों को भविष्य के लिए सुरक्षित रखा जा रहा है।.पेड़–पौधों और जीव–जंतुओं को बचाने के लिए हमारे देश में एक प्राचीन परंपरा रही है– देववन । ये देववन आज भी जीवन के प्रतीक हैं....आइए, सुनें...

———————————————— संगीत————————————————

संदर्भ

1. इंटरनेट सामग्री
2. सेक्रेड ग्रूव्स एंड सेक्रेड ट्रीज ऑपफ उत्तर क डा– माधव गाडगिल
3. कालीदास के पक्षी– हरिदत्त वेदालंकार
4. महाभारत कथा (शकुंतला–दुष्यंत)
5. इंडियन बर्ड्स– सालिम अली
6. आनंद पंछी निहारन का– विश्वमोहन तिवारी